व्याख्यान-3

Date: / /

स्नातक प्रथम खण्ड

अतीत (कथा संग्रह)

स्वप्न ओ सत्य कथाक कथावस्तु

'अतीत' कथा संग्रहक पहिल कथा 'स्वप्न ओ सत्य' थिक। एकर सर्वप्रथम प्रकाशन 'वैदेही'क जनवरी 1955क अंकमे भेल।

ई कथा विवाहेत्तर सम्बन्धक दुष्परिणामक कथा कहैत अछि। काम काजी डॉक्टर पुरुषक अन्य स्त्रीक संग सम्बन्ध, साठिक दशक आ तत्काली मिथिलामे नारीक स्थिति। विचार करियौक एकटा पुरुषक सम्बन्ध दोसर स्त्रीक संग भऽ जाइत अछि। ओकरा बुझने तऽ ओ अपन पत्नीसँ एहि तथ्यकेँ नुकौने अछि। दोसर दिस ओकर कनियाँ नित्य परिवर्तित होइत व्यवहारादि सँ अपन पुरुखक दुश्चरित्रक भान भऽ जाइत अछि आ एहि शोकसँ ओकर मृत्यु भऽ जाइत अछि। ~~ओकर~~ आब बुझियौ जे जाहि पुरुषकेँ कोनो अन्य माध्यमसँ ई ज्ञात होइत अछि जे ओकर कनियाँक मृत्यु स्वयं ओकर दुश्चरित्रता छल, ताहि समय ओहि पुरुषक मनोदशा कोन रूपक भऽ सकैत अछि। ई कथा मनुष्यक ओहि चरित्रक उद्भेदन करैत अछि जाहिमे ओकर अपन कुकृत्यक स्मरण कोनो घटनासँ होइत अछि। ओ एहिसँ आत्मग्लानिक अनुभव करैत अछि। कथामे डाक्टर साहेब एहने पात्रक रूपमे चित्रित भेल छथि। सभ दिन अपन कनियाँ सँ झूठ बाजि कऽ ओ दोसर स्त्रीसँ सम्बन्ध बनौने रहैत छथि। आ कहियो एकर आभास धरि नहि होमय दैत

Scanned with CamScanner

छथि। आ एहि व्यवहार सँ हिनक कनियाँ के विवश भऽ आत्महत्या करय पड़ैत छनि।

कथा मे 'कथा पाठ' एकटा नव प्रयोग कथाकार द्वारा भेल अछि। कथाक बहुलांश साहित्यिक कार्यक्रम मे पठित कामपिपासा सँ व्याकुल डॉक्टरक व्याभिचारक कथा सन्निहित अछि। एहि कथाक प्रसंग (मैथिली-शोध पत्रिका अंक-7 मे) डॉ० अमरनाथ झा लिखैत छथि जे "डॉक्टर अजेन्द्र कार्तिक लाय लगाय अपन पत्नी कें छोड़ि अन्यत्र व्याभिचार मे लिप्त रहैत छलाह। पत्नीक कनातस्थहु मे ई चालि अनवरत चलैत रहैत छलैन्हि आ परिणाम स्वरूप हुनक पत्नी विष पीबि कऽ प्राणान्त कऽ लेलखिन्ह, तखन ओहि साहित्यिक गोष्ठीमे सम्मिलित कुन्चन बाबू स्वतः मर्माहत भऽ चुपेचाप उठिकें विदा भए जाइत छथि। तथ्य ई छल कुन्चन बाबूक आचरण डाक्टरेक आचरण जकाँ छल। आ हुनकहु पहिल पत्नीक मृत्यु तहिना भेल रहैन्हि।

कुन्चन बाबू एकटा साहित्यिक गोष्ठीमे गेल छलाह। जतय कथा पाठमे जे गल्प पढ़ल जाइत रहैक, तकर चरित्र नायक डॉक्टरक आचरण कुन्चन बाबू संग छल। आ एकर अनुभव जखने हुनका होइत छनि तऽ ओ ओतय सँ विदा भऽ जाइत छथि। विदा होमैत होमैत हुनक जे मनोदशा छल से कथाकारक प्रयासके सार्थक करैत अछि – "अपन जीवनक जे अंश ओ सभ सँ गुप्त रखने छलाह तकर ज्ञान रोहिणी के होयतनि तकरा ओ असम्भव बुझैत छलाहि। से नहि भेला सँ अपेक्षाकृत क्रम सेहो होयब कोना सम्भव छल? तैं समाजक अन्य व्यक्ति

जकाँ ओहो ज्वर मात्र कें रोहिणिक असामयिक मृत्युक कारण बुझलनि। परन्तु आइ सहसा हुनक मानसिक शांति भंग भऽ गेलनि। आई पहिल बेर हुनक मनमे संदेह अंकुरित भेलनि। ओ विचलित भ' उठलाह आ। (कथा संग्रहक अंश)

एहि प्रकारें कहि सकैत छी जे संग्रहक पहिल कथा 'स्वप्न आ सत्य' पुरुष वर्गक ओहि कुत्सित मानसिकताक परिचय करबैत अछि जाहिमे पुरुष अपन क्षणिक सुखक लेल व्यभिचार मे लिप्त भऽ जाइत अछि आ ओहिसँ ओकर परिवार बिलाइ जाइत अछि।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वरसिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर, मधुबनी

Scanned with CamScanner